By:- DR. RAMAN KUMAR THAKUR
Asst. Professor, ECONOMICS
D.B. College, Jaynagar,
Madhubani.

Date 31/03/20.
Page 1.

बेरोजगारी (UNEMPLOYMENT)

Q. → भारत जैसे विकासशील देशों में बेरोजगारी के प्रकारों तथा कारणों की विवेचना कीजिए।

Ans → सामान्यतया जब एक व्यक्ति को अपने जीवन-निर्वाह के लिए कोई कार्य नहीं मिलता है तो उस व्यक्ति को बेरोजगार और इस समस्या को बेरोजगारी की समस्या कहते हैं। दूसरे शब्दों में:- "जब कोई व्यक्ति कार्य करने का इच्छुक है और शारीरिक रूप से कार्य करने में समर्थ भी है, लेकिन उसको कोई कार्य नहीं मिलता जिससे की वह जीविका कमा सके तो इस प्रकार की समस्या बेरोजगारी की समस्या कहलाती है।"

भारत में बेरोजगारी विभिन्न स्वभाव की है जिसको निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। जो इस प्रकार से है →

(1) संरचनात्मक बेरोजगारी → जब देश में पूँजी के साधन सीमित होते हैं और काम चाहने वालों की संख्या बराबर बढ़ती जाती है तो कुछ व्यक्ति बिना काम के ही रह जाते हैं क्योंकि उनके लिए पर्याप्त पूँजी साधन नहीं होते हैं। इस प्रकार की बेरोजगारी विकासशील देशों में पायी जाती है तथा यह दीर्घकालीन होती है। भारत में बेरोजगारी का स्वभाव भी इसी प्रकार का है।

(2) अल्परोजगार :→ जब किसी व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार कार्य नहीं मिलता है या पूरा काम नहीं मिलता है तो इसे अल्परोजगार कहते हैं जैसे जब एक इंजिनियरिंग की डिग्री प्राप्त व्यक्ति लिपिक या श्रमिक के रूप में कार्य करता है तो इसको अल्परोजगार कहते हैं ऐसा व्यक्ति कार्य करता तो दिखायी देता है लेकिन उसकी पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं होता है।

(3) खुली बेरोजगारी :→ जब व्यक्ति कार्य करने की के योग्य है और वे कार्य करना चाहते हैं लेकिन उनको कार्य नहीं मिलता है तो ऐसी

स्थिति को खुली बेरोजगारी कहते है। भारत में इस प्रकार की बेरोजगारी व्याप्त है। यहाँ लाखों व्यक्ति ऐसे है जो शिक्षित है, तकनिकी योग्यता प्राप्त है, लेकिन काम करने का अवसर नही मिल रहा है।

(4.) मौसमी बेरोजगारी :→ इस प्रकार के बेरोजगारी वर्ष के कुछ समय में ही पायी जाती है। भारत में यह कृषि में पायी जाती है जब खेती की जोताई एवं बोआई का मौसम होता है तो कृषि में काम होता है लेकिन बिच के समय में इतना काम नही होता है। अतः इस प्रकार के समय में श्रमिकों को काम नही मिलता है इस बेरोजगारी को मौसमी बेरोजगारी कहते है।

(5.) शिक्षित बेरोजगारी :→ यह खुली बेरोजगारी का ही एक रूप है इसमें शिक्षित व्यक्ति बेरोजगार होते है शिक्षित बेरोजगार में कुछ व्यक्ति अल्परोजगार की स्थिति में होते है जिन्हें रोजगार मिला हुआ होता है लेकिन वे उनकी शिक्षा की अनुरूप नही होता है। भारत में इस प्रकार की बेरोजगारी भी पायी जाती है वर्तमान में यहाँ कुल पंजीकृत बेरोजगारो में से 60 प्रतिशत शिक्षित बेरोजगार है।

(6.) प्रच्छन्न बेरोजगारी :→ बेरोजगारी का यह स्वरूप प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नही देता है. यह छिपा रहता है भारत में इस प्रकार की बेरोजगारी कृषि में पाई जाती है जिसमें आवश्यकता से अधिक व्यक्ति लगे हुए है यदि इनमें से कुछ व्यक्तियों को खेति के कार्य से अलग कर दिया जाय तो उत्पादन में कोई अन्तर नही पड़ता है। ऐसे व्यक्ति प्रच्छन्न बेरोजगारी के अंतर्गत आते है।

उदाहरण के लिए खेत में तीन व्यक्तियों की आवश्यकता है परंतु घर के सभी पाँच व्यक्ति उस कार्य में लग जाते है परंतु इससे उत्पादन में कोई अंतर नही आता है तो इस प्रकार 2 व्यक्ति इस कार्य में अधिक लगे है। यही अदृश्य या छिपी बेरोजगारी है।

उपर्युक्त बेरोजगारी के प्रकारों को स्पष्ट करने के बाद अब हम इसके कारणों की चर्चा करेंगे :→ → → → →

(A) बढ़ती जनसंख्या :→ बेरोजगारी में तीव्र गति से वृद्धि का मुख्य एवं महत्वपूर्ण कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है जो 1.93 प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ रही है। जबकी रोजगार की सुविधा उस दर से नहीं बढ़ रही है.

(B) दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली :→ देश में शिक्षित बेरोजगारी बढ़ने का मुख्य कारण हमारी दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली है अब शिक्षा सिद्धांत प्रधान शिक्षा है जबकी इसको व्यवसाय प्रधान (Job oriented) होना चाहिए।

(C) हस्तकला एवं उद्योगों की अवनति :→ बेरोजगारी बढ़ाने में हस्तकला एवं लघु उद्योगों की अवनति ने भी काफी योगदान दिया है। इन उद्योगों की अवनति का मुख्य कारण मशीनों के प्रयोग में वृद्धि का होना है इससे उन उद्योगों के श्रमिकों को भी अन्य कार्य ढूंढने के लिए विवश होना पड़ा है जिससे बेरोजगारी में वृद्धि हुई है.

(D) त्रुटिपूर्ण नियोजन :→ देश में 1951 से नियोजन का कार्य चल रहा है, लेकिन यह नियोजन त्रुटिपूर्ण रहा है इसमें रोजगार मूलक नीति का प्रतिपादन नहीं किया गया है अतः विद्वानों का मत है कि इस कारण से बेरोजगारी में वृद्धि हुई है.

(E) मंद पूँजी निर्माण गति :→ देश में पूँजी निर्माण की गति बहुत ही धीमी रही है जिसके कारण उद्योगों, व्यवसायों व सेवाओं का विस्तार भी धीमी गति से ही हुआ है जबकी जनसंख्या के तीव्र गति से बढ़ने के कारण रोजगार सुविधाएँ उस दर से नहीं बढ़ पायी है.

Scanned with CamScanner

(F) यंत्रीकरण एवं अभिनवीकरण :→ भारत ~~विकासशील~~ विकासशील देश होने के कारण यंत्रीकरण एवं अभिनवीकरण की ओर बढ़ रहा है। देश में स्वचालित मशीनें लगायी जा रही हैं कृषि में यंत्रीकरण की गति बराबर बढ़ रही है इन सभी के परिणाम हैं कि अब पहले की तुलना में कम व्यक्तियों से वही कार्य कराया जाता है।

(G) स्त्रियों द्वारा नौकरी :→ स्वतंत्रता से पूर्व बहुत थोड़ी स्त्रियाँ नौकरी करती थी लेकिन आज इनकी संख्या एवं प्रतिशत पहले से कहीं अधिक है इससे पुरुषों में बेरोजगारी बढ़ी है।

(DR. RAMAN KUMAR THAKUR
Asstt. professor (Guest)
Depatt. of ECONOMICS.
D.B. College, Jaynagar
Madhubani (Bihar).
Email – ramankumar_2011@rediffmail.com
Mob:– 9430640318

Date – 31.03.2020.

Scanned with CamScanner